जॉन डीवी का शिक्षा दर्शन

समस्त शिक्षा व्यक्ति द्वारा प्रजाति की सामाजिक चेतना में भाग लेने से आगे बढ़ती है-डीवी

डीवी के दार्शनिक विचार

डीवी की दार्शनिक विचारधारा व्यावहारिक है इसलिए वह दर्शनशास्त्र को संसार के ज्ञान का साधन नहीं मानता वरन वह शिक्षा मानता है जो संसार पर नियंत्रण रखने और उनके पुनरसंगठन में सहायक होती है। दूसरे शब्दों में दर्शन और शिक्षा दो होते हुए भी एक ही है इसे डीवी का कथन है कि दर्शनशास्त्र को शिक्षा का सामान्य सिद्धांत भी कहा जा सकता है।

डीवी के अनुसार शिक्षा का अर्थ

शिक्षा अनुभवों के सतत पुनर्निर्माण द्वारा जीवन की प्रक्रिया है यह व्यक्ति की उन समस्त क्षमताओं का विकास है जो उसको अपने वातावरण को नियंत्रित करने एवं अपनी संभावनाओं को पूर्ण करने के योग्य बनाती है।

1-शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है।

2-शिक्षा स्वयं जीवन है।

3-शिक्षा अनुभवों के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है।

4-शिक्षा विकास है।

5-शिक्षा मार्गदर्शन है।

डीवी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

1-तात्कालिक उद्देश्य

2-अनुभव का नियमित पुनर्निर्माण

3-वातावरण के साथ समायोजन

4-सामाजिक कुशलता

5-गतिशील एवं अभियोजन योग्य मन का निर्माण

डीवी के अनुसार पाठ्यक्रम

1-बालक केंद्रित पाठ्यक्रम

2-उपयोगिता का सिद्धांत

3-क्रियाशीलता का सिद्धांत

4-रुचि का सिद्धांत

5-अनुभव का सिद्धांत

6-सभ्यता का सिद्धांत

डीवी के अनुसार शिक्षण विध

1-कार्य के माध्यम से शिक्षा

2-प्रयोग के माध्यम से शिक्षा

3-अनुभव के माध्यम से शिक्षा

4-सहसंबंध के माध्यम से शिक्षा

5-योजना विधि

डीवी के अनुसार शिक्षक की भूमिका

1-शिक्षक और निरीक्षक और पथ प्रदर्शक होना चाहिए।

2-शिक्षा को एक समाज सेवक होना चाहिए।

3-शिक्षक को ईश्वर का प्रतिनिधि होना चाहिए।

डीवी के अनुसार शिक्षार्थी का स्थान

डीवी ने बालक को पूर्ण स्वतंत्र दिए जाने का समर्थन किया है उसने कहा है कि बालक का पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि रखना चाहिए बालक को विषय चुनने शिक्षण विधि का प्रयोग करने और मूल्यों का निर्माण करने की स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए।

डीवी के अनुसार अनुशासन

1-आत्मानुशासन पर बल

2-सामाजिक अनुशासन पर बल

डीवी के अनुसार विद्यालय

1-विद्यालय छोटी सामाजिक संस्था है।

2-विद्यालय एक विशेष वातावरण है।

डीवी के अनुसार-विद्यालय शिक्षा अधिकारी के बाहर के वृहद समाज की प्रतिछाया होगा जिसने रहकर जीवित रहने की कला को सीखा जा सकता है, परंतु यह एक शुद्ध सरलीकरण तथा उत्तम रूप से संतुलित समाज होगा।

डीवी के अनुसार विद्यालय एक प्रयोगशाला है।

<u>आधुनिक शिक्षा में डीवी का योगदान</u>

1-शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है।

2-स्वा अनुभव शिक्षा का एकमात्र आधार है।

3-शिक्षा एक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आवश्यकता है।

4-शिक्षा जीवन की तैयारी ना होकर स्वयं जीवन है।

5-अनुभव का निरंतर पुनर्निर्माण है।

6-शिक्षा का कार्य बालकों को प्रत्येक परिस्थिति के साथ अनुकूलन योग्य बनाना है।

7-विद्यालय समाज का लघु रूप है।

8-सामाजिक कुशलता की प्राप्ति शिक्षा का उद्देश्य है।

9-सामाजिक अनुशासन पर बल।

10-विद्यालय सामाजिक एवं सार्वजनिक संस्था है।

<u>दोष</u>

1-नैतिक शिक्षा की उपेक्षा

2-व्यक्तिक भिन्नता के आधार पर शैक्षणिक समस्या है।

3-निगमन विधि की उपेक्षा

4-आध्यात्मिकता का अभाव

5-सत्य की परिवर्तनशील ता का विचार दोषपूर्ण

6-प्रत्यक्ष अनुभव ही ज्ञान का एकमात्र स्रोत है का विचार दोषपूर्ण

7-उपयोगिता के सिद्धांत पर बल

8-क्रियात्मकता पर अधिक बल

9-शिक्षा में पूर्व निर्धारित उद्देश्यों का अभाव

10-सहसंबंध के सिद्धांत पर अत्यधिक बल